

प्रेस विज्ञप्ति

राजुवास में मछलियों का हुआ सी.टी. स्कैन गुजरात के मत्स्य वैज्ञानिक कर रहे हैं डिजिटल शोध कार्य



बीकानेर, 3 मई। कामधेनू विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात के मत्स्य वैज्ञानिक का एक दल समुद्री मछलियों की आंतरिक संरचनाओं के डिजिटल शोध कार्य के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर पहुँचा है। देश में पशुचिकित्सा विज्ञान में पहली सी.टी. स्कैन मशीन वेटरनरी विश्वविद्यालय में स्थापित की गई है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि राजुवास और कामधेनू विश्वविद्यालय, गांधीनगर के मध्य पशुचिकित्सा एवं शिक्षा में हुए आपसी करार (एम.ओ.यू.) के तहत मछलियों में शोध कार्यों और विस्तृत अध्ययन का एक पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया

गया है। इसके प्रारंभिक चरण में समुद्रीय मछलियों की शरीर रचना विज्ञान का डिजिटल अध्ययन किया जा रहा है। बाद में फ्रेश वाटर मछली प्रजातियों को भी इसमें शामिल किया जाएगा। गुजरात के मत्स्य वैज्ञानिक डॉ. स्मित लैंडे और डॉ. दिव्येश केलावाला समुद्र के खारे पानी में रहने वाली 20 विभिन्न प्रजातियों की आंतरिक संरचनाओं का सी.टी. स्कैन की मदद से बीकानेर वेटरनरी विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं। इससे उनकी आन्तरिक संरचना का डाटा बेस तैयार किया जाएगा। भारत में अपनी तरह का पहला शोध कार्य होगा। इसमें वेटरनरी विश्वविद्यालय के सर्जरी के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रवीण बिश्नोई, डॉ. साकार पालेचा, डॉ. सत्यवीर सिंह और डॉ. एस.के. झीरवाल भी कार्य में सहयोगी हैं। गौरतलब है कि विश्व में समुद्र के खारे पानी में मछलियों की करीब 32 हजार प्रजातियां पाई जाती हैं।

समन्वयक
जनसम्पर्क प्रकोष्ठ